कविता

ये बच्चे हैं

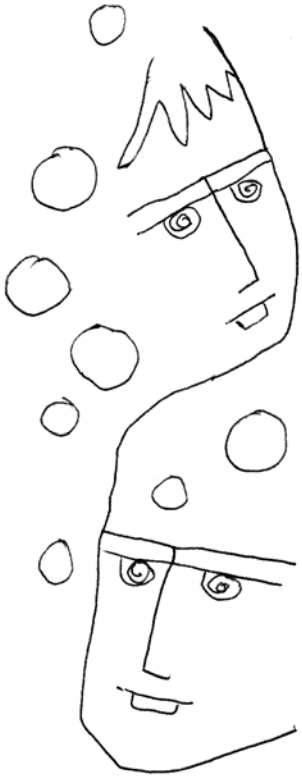

ये बच्चे हैं
खेल-खेल में
दिल के भीतर घर कर लेते
खेल-खेल में
दीवारों को तोड़ गिराते
खेल-खेल में किले ढहाते
गिले बहाते

मुरझाए कुम्हलाए चेहरों को
दीपित करते
मन पर छाई गर्द हटाते
निर्मल करते-उज्ज्वल करते

फूल खिलाते
तितली बन जाते
फूल-फूल पर चंवर ढुलाते

खेल-खेल में
गगन नापते
तारों से झोली भर लाते

ये बच्चे हैं
धरती पर तूफान मचाते
ळी-ही हंसते, जीभ दिखाते
बच्चे हैं ये
भांति-भांति के स्वप्न जगाते ◆

शिवराम